बीएचयू आईटी के 1982 बैच के छात्रों का दो दिनी पुरातन छात्र सम्मेलन

मौर्वी हास्टल में जुटे पुरनियों ने खूब की धमा-चौकड़ी

बीते दिनों की याद कर कभी लगाये ठहाके तो कभी हुए भावुक

परिवार के सदस्यों के साथ हास्टल में जम कर हुआ फोटो सेशन

बाराणसी (सं.)। ओए, देवाशीष! हास्टल का गार्डेन देख, दिल गार्डेन-गार्डेन हो गया। यार, 25 साल बाद मिल रहे हैं, लग रहा है कल ही इस हास्टल से निकले थे। आज तो खूब छक के मेस महराज के हाथ का खाना खायेंगे। ऐसे ही वाक्यों से बीएचयू आईटी का मौर्वी छात्रावास मंगलवार को गुलजार रहा। 1982 में बीटेक की डिग्री पाने वाले पुरातन छात्र बिछुड़ने के 25 वर्ष बाद मिले थे लिहाजा मन में उल्लास कुलांचे भर रहा था। एक ओर पुरातन छात्र सम्मेलन का जोश था तो दूसरी ओर संस्था से मिले पहचान और सम्मान के एवज में संस्था के लिए कुछ करने का जज्बा भी दिखा।

मौर्वी हास्टल में सौ से ज्यादा पुरातन छात्र जुटे और खूब हो-हल्ला मचाया। वार्डन डा. आरके मिश्र एवं एलएन सिंह की मौजूदगी में पुरातन छात्रों ने खूब धमा-चौकड़ी की। कारण आज पुरातन छात्रों का दिन था। पुरातन छात्र संजीव शर्मा ने पुरानी स्टाइल से सीटी बजायी तो उनके साथियों ने कहा, अबे! अब तो ना बजा सीटी। कहीं आईटी के डा.बीएन राय तो कहीं डा. पीके मिश्र को घेरे हुए पुरातन छात्र वर्तमान स्थिति का जायजा लेते दिखे।

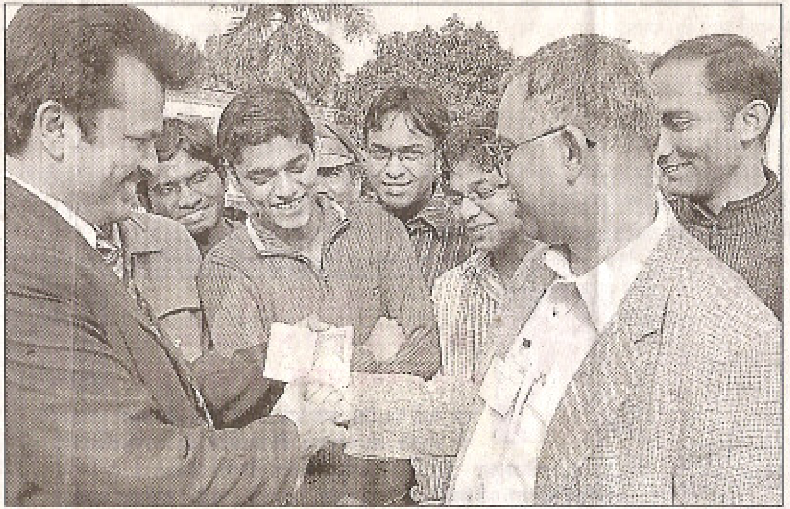

वर्तमान बीटेक छात्रों को पहले का परिचयपत्र दिखाते पुरातन छात्र

पुराने दिनों को याद करते हुए अमेरिका के सिटी बैंक में कार्यरत अरबिंद बैनर्जी ने कहा, पास में ही एक गुमटी थी जहां हम चाय पीने जाते थे। तो अजय ने कहा कि मूसा की दुकान पर। अरबिंद ने कहा आज देखा, मूसा की तस्वीर टंगी थी। दुकान पर उसका बेटा बैठा था। इसी बीच देवाशीष भट्टाचार्य बोल पड़े बाप रे! हास्टल तो वैसे ही है पर मोटरसाइकिल की संख्या कितनी बढ़ गयी। जब हम थे तो 380 छात्रों के बीच केवल प्रेम एवं सूर्य प्रकाश के पास थी बाइक। श्रीकांत राव ने कहाकि मेस के पुलिस महराज की याद आ रही है, कितना अच्छा खाना खिलाते थे। देव प्रताप बोले, तब हास्टल में भीड़ कम थी। डा. मिश्र ने बताया कि अब एक कमरे में दो लड़के रहते हैं, पहले एक को एक कमरा एलाट होता था।

सन 1977 से 82 बैच में करीब 380 छात्रों के बीच एक मात्र छात्रा रहीं रीता अग्रवाल ने कहा कि आज तो आईटी में कई छात्रायें दिखीं, मैं तो अकेली थी। तब तो अक्सर श्री विश्वनाथ मंदिर से सिंहद्वार तक पैदल जाती थी, आज भी आयी हूं मजा आ गया।

संजीव शर्मा, अरबिंद बनर्जी, अजय कुमार, देवाशीष (ऊपर)
श्रीकांत राव, राजेन्द्र कुमार, रीता अग्रवाल, देव प्रताप (नीचे)

इंदौर मण्डल के आईजी राजेन्द्र कुमार बेहद आनंदित दिखे। बोले, इसी जमीन ने हमें ज्ञान और समाज में सम्मान दिलाया है। आज इसकी गोद में आकर बेहद हर्ष हो रहा है। मौजूदा छात्रों से मिला, इनके तेवर देश को लाभ दिलायेंगे। पुरातन छात्र अपने परिवार के सदस्यों के साथ हास्टल दर हास्टल की सैर किये तो एक-दूसरे के साथ पुराने दिनों को शेयर करते भी दिखे।